मुम्बई-बोरीवली। ब्र.कु. बिंदु को उनके अभूतपूर्व कार्यों के लिए अवॉर्ड देकर सम्मानित करते हुए आर.के. रविन्द्रन,रोट्री इंटरनैशनल प्रेसीडेंट। साथ हैं मयंक देसाई,प्रेसीडेंट ऑफ रोट्री क्लब,बोरीवली तथा डिस्ट्रीक्ट गवर्नर लता सुब्रीडो।

नरकटियागंज-बिहार। प्रेस कॉन्फ्रेन्स के तहत उपस्थित सभी पत्रकार सुजय कुमार, चन्द्रमोहन, सूरज कुमार, राजेश कुमार, अवधेष शर्मा, गौतम कुमार। साथ हैं ब्र.कु. कविता तथा ब्र.कु. मधु।

हाथरस। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' अभियान के तहत लगाए गए शिविर का उद्घाटन करते हुए नवनियुक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.रामवीर सिंह, ब्र.कु.शान्ता, ब्र.कु.दुर्गेश, पंजाब नैशनल बैंक के राकेश अग्रवाल तथा अन्य।

पालम विहार-गुड़गांव। कमिशनर ऑफिस में गुड़गांव पुलिस तथा ब्रह्माकुमारीज़ का संगठित रूप से 'नारी सुरक्षा-हमारी सुरक्षा अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए आइ.पी.एस. आलोक मित्तल, ब्र.कु. उर्मिल, ब्र.कु. स्वदर्शन, ब्र.कु. सुदेश तथा ब्र.कु. रंजना।

ओरछा-म.प्र.। राजयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.राज तथा ब्र.कु.मार्क।

दिल्ली-उत्तम नगर। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के बाद प्रभु स्मृति में एम.एल.ए. पवन शर्मा, ब्र.कु.विमला तथा अन्य।

बाबा को मैनें फरिश्ता के रूप में देखा

परमात्म मिलन का अनुभव

मदनलाल शर्मा, बिज़नेस मैन,जयपुर

अच्छा परिवार, अच्छा व्यापार होने के बाद भी लगता था कि आखिर जीवन क्या है? जीवन श्रेष्ठ बनाने की लालसा बनी रहती थी। 1965 में साकार बाबा से मुलाकात हुई तो उनका आकर्षक व्यक्तित्व, फरिश्तों जैसा रुबाब एवं स्नेह मेरे दिल को भा गया। उनके माध्यम से मिले परमात्मा प्यार के अनुभव ने मेरे जीवन का मकसद पूरा किया। बस तब से आजतक मेरे जीवन में सदा उमंग-उत्साह रहता है। मेरे जीवन की सच्चाई व सफाई के कारण परिवार वालों का प्रेम भी सदा बना रहा है। मैं जो भी कहता हूँ वे आदरपूर्वक सम्मान करते हैं व विश्वास भी। यह मेरा सौभाग्य है। यह कहना है मदनलाल शर्मा, जयपुर बिज़नेसमैन का। उनकी ओम शान्ति मीडिया से हुई रूबरू मुलाकात के कुछ अंश -

अच्छी पढ़ाई, बिज़नेस और परिवार में भी सबकुछ ठीक चलने के बावजूद मेरे मन में एक सवाल था जिसे जानने की जिज्ञासा मेरे मन में थी कि आखिर ये जीवन क्या है, इसे जानने के लिए मैं विवेकानंद आश्रम से भी जुड़ा और साथ-साथ ध्यान भी करता था, रामकृष्ण परमहंस को भी मानता था, काली को भी पूजता था लेकिन ये चाहत थी मुझे जानने की कि परमात्मा कौन है? हालांकि मुझे किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं थी फिर भी मैं इसे जानना चाहता था। उसी दौरान मुझे किसी ने ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में बताया। थोड़ा संकोच के साथ मैं ब्रह्माकुमारी संस्था में गया। वहां काफी वाद-विवाद के बाद बहनों ने मुझे सात दिन का कोर्स करने को कहा। तो मैंने अगले दिन से ही कोर्स शुरु कर दिया। कोर्स के दूसरे दिन ब्र.कु. निर्वैर सेवाकेन्द्र पर आये, वहां उनसे मुलाकात के दौरान मैंने ये पूछा कि हमें किसे याद करना चाहिए, स्वामी विवेकानंद को, रामकृष्ण को याद करें तो उन्होंने बताया कि आप भी बिंदी है और परमात्मा भी बिंदी हैं लेकिन वो ज्ञान का सागर है सुख का सागर है उसको याद करो। तो इस प्वाइंट की छाप मेरे दिल पर पड़ गई और मैंने सोचा कि ये बात कोई इंसान नहीं कह सकता। ये जो बता रहे हैं वो बिल्कुल ठीक है। फिर उन्होंने मुझे पवित्रता के ऊपर बताया। और भी ऐसी कई बातें बताईं जो मुझे सही लगीं। फिर उसके बाद धीरे-धीरे इस ज्ञान मार्ग में मेरी यात्रा शुरु हुई।

मैं सन् 1965 में पहली बार बाबा से मिलने माउण्ट आबू आया। बाबा को देखते ही लगा जैसे कोई फरिश्ता मेरे सामने हो। उनका बाहरी व्यक्तित्व भी बड़ा आकर्षक था। जब बाबा ने मुझे अपनी गोद में लिया तो मुझे बहुत ही हल्का महसूस हुआ तथा बाबा लाइट के शरीर में नज़र आ रहे थे। मैं एक परिवार की भांति बाबा के साथ एक सप्ताह रहा। उस समय बाबा से इतना प्यार पाया, इतना सुख पाया जो मैं पूरे संसार में कहीं नहीं पा सका था। उसके बाद मैंने इस ईश्वरीय मार्ग पर चलने का निश्चय कर लिया। तब से मैं और मेरा परिवार इस रास्ते पर साथ-साथ चल रहे हैं। मैंने अपने ब्राह्मण जीवन, अपने परिवार तथा अपने व्यवसाय तीनों को ही एक साथ अच्छी रीति संभाला और बाबा ने इसमें मुझे सफलता भी दी। समाज भी हमारे बदले हुए व्यवहार व सरल स्वभाव को देखकर हमारा सम्मान करता है।

साकार बाबा से मिलन की अनुभूति भी बड़ी अद्भुत थी और अव्यक्त बाबा से मिलन के भी क्या कहने! साकार बाबा के साथ हम खेलपाल किया करते थे, उनके अंग-संग रह प्यार भरी पालना की अनुभूति होती थी और जब अव्यक्त बाबा पेज 8 पर शेष

परमात्म शक्ति का केन्द्र है माउण्ट आबू

ऐसा लगा मानो यही सच्चा ज्ञान है, परमात्मा की सच्ची पहचान है। सब शास्त्रों, वेदों का मंथन करके जो अमृत निकलता है वही यहाँ प्राप्त हो रहा है। संसार में भिन्न-भिन्न तरह के शास्त्र हैं परन्तु वहाँ सत्य परिचय नहीं है। महंत मौजीनाथ सिद्ध गरीबनाथ मठ,तुलजापुर शक्तिपीठ,महाराष्ट्र जो राजयोग शिविर में आये उनसे ओम शान्ति मीडिया से हुई बातचीत के अंश यहाँ प्रस्तुत है -

मैं पहली बार राजयोगा शिविर के माध्यम से इस संस्था से जुड़ा हूँ। पर पहली बार में ही मुझे यहाँ आने पर स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। ऐसा लगा मानो यही सच्चा ज्ञान है, परमात्मा की सच्ची पहचान है। सब शास्त्रों, वेदों का मंथन करके जो अमृत निकलता है वही यहाँ प्राप्त हो रहा है। संसार में भिन्न-भिन्न तरह के शास्त्र हैं परन्तु वहाँ सत्य परिचय नहीं है। माउण्ट आबू में सभी समर्पित लोगों का आदर भाव, एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना सारे जहान से अलग है, स्वर्ग से भी बढ़कर है। सबमें समन्वय, त्याग व सेवाभाव की जो भावना है उसीसे परमात्मा की प्राप्ति होती है। शास्त्रों का ज्ञान हर लिखने वाले की कल्पना के अनुसार है पर यहाँ आकर पता चला है कि वह सच्चा ज्ञान हमारी कलपना से भी परे है। केवल यहीं परमात्मा से मिलन संभव है। साधु, संत, महात्माओं, पुजारियों इत्यादि के द्वारा जो ज्ञान दिया जाता है उसमें वे सच को छिपा रहे होते हैं। इस बात को पुन: सिद्ध करने के लिए कि परमात्मा निराकार है बहुत बड़ी जन-जागृति की ज़रूरत है।

लोगों में जो पहले से ज्ञान है वह सब निकालकर परमात्मा शिव का ज्ञान मिलना चाहिए ताकि वे समझें कि सच क्या है। ब्रह्माकुमरीज़ की ओर से यह हो भी रहा है और होता भी रहेगा। यहँ मिल रहे ज्ञान का सभी को अभ्यास करना चाहिए।

इस संस्था में जो चल रहा है वह अनुभव से ही पहचान सकते हैं। इसी अनुभव के द्वारा उन्हें सत्य की पहचान कराना संभव है। यह ज्ञान सभी तक पहुँचना चाहिए और जितने धर्म-गुरु इतयादि हैं उन्हें भी इसका प्रचार करना चाहिए।

मधुबन के वातावरण एवं परिसर से ही यह समझ आ जाता है कि यहाँ परमात्मा स्वय अते हैं। और संस्थानों में मैंने श्रेष्ठत्व की स्पर्धा को देखा पर यहाँ वह बिल्कुल नहीं है। यहाँ लोभ व मोह नहीं है तथा सम्पूर्ण त्याग की भावना है। इसलिए यह सबसे ऊंचा व महान तीर्थ है। यही स्वयं ईश्वर का कार्य है और खुद वह ही अपना कार्य हम बच्चों से करवा रहा है।

मेरी सभी से यही विनती है की इधर-उधर भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है, सारी समस्याओं के समाधान इसी संस्था के पास हैं। आत्मा यहाँ आकर मानो परमात्मा से एकरूप हो गई है। यही एकरूपता ही परमात्मा का संदेश जन-जन तक पहुँचाने में लाभदायक है। इससे शक्तियाँ स्वत: प्रवाहित होने लगती हैं। आखिर सभी का लक्ष्य भी तो वही है - परमात्मा से मिलना। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन जो है वह पेज 8 पर शेष